UGC CARE List (Arts and Humanities) RNI : UTTMUL00029 ISSN : 2347-9892

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्ताराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - अष्टमम् अङ्कः - सप्तदशः दिसम्बरमासः - २०२१

प्रधानसम्पादकः

प्रो० दिनेशचन्द्रशास्त्री

कुलपतिः

सम्पादकः

डॉ. रामरतनखण्डेलवालः

प्रकाशकः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः

हरिद्वारम्, उत्तराखण्डम्

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्ताराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - अष्टमम् अङ्कः - सप्तदशः दिसम्बरमासः - २०२१

प्रधानसम्पादकः

प्रो. दिनेशचन्द्रशास्त्री

कुलपतिः

सम्पादकः

डॉ. रामरतनखण्डेलवालः

प्रकाशकः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

उत्तराखण्डम्

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
1.	पाणिनीयतन्त्रदृशा धात्वर्थनिर्देशस्यौपलक्षण्यम्	लोकेशकुमार:	1
2.	पुराणवाङ्मये तीर्थपर्यटनम् (केदारनाथसन्दर्भे)	डॉ. रामविनयसिंह:	7
3.	श्रीमद्भगवद्गीतायां जीवनालोक:	डॉ. रामचन्द्र:	12
4.	संस्कृतवाङ्मये बालिकानां व्यक्तित्त्वं शिक्षाविषयकं वर्णनञ्च	प्रियदर्शिनी ओली	17
5.	साहित्ये मानवीयमूल्यानि	प्रमेशकुमारबिजल्वाण:	24
6.	महाभारते न्यायदण्डविधानञ्च	डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्त: 'दीप:'	27
7.	श्रीमद्वाल्मीकिरामायणे प्रयुक्तानां छन्दसां निदर्शनम्	डॉ. नवीन: जसोला	32
8.	मोक्षसाधनसामग्रिषु ज्ञानम्	के. मेनोग्ना	38
9.	ज्योतिषशास्त्रे यौनसंचारितरोगाणां विचार:	डॉ. रमेशशर्मा	42
10.	मानवजीवने संस्काराणां महत्त्वम्	डॉ. सुमनप्रसादभट्ट:	49
11.	उत्तराखण्डे संस्कृतेऽनूदिते साहित्ये रौद्ररस: वीररसश्च	डॉ. रितेशकुमार:	58
12.	आधुनिकविज्ञानमतेनोल्कापातानां समीक्षणम्	डॉ. प्रदीपकुमारसेमवाल:	62
13.	धर्मसूत्रीय प्रायश्चित्त-विधान: एक विश्लेषण	डा. विश्वेश वाग्मी	64
14.	श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित ज्ञान की उपादेयता	डॉ. रामरतन खण्डेलवाल डॉ. वेदव्रत	71
15.	गृह्यसूत्रों में उल्लिखित कृषिकर्म से सम्बन्धित धार्मिक कृत्य	डॉ. प्रशान्त कुमार डॉ. अजित राव	76
16.	पाणिनीय परम्परा में 'युवोरनाकौ' : समग्र विश्लेषण	डॉ. रवि प्रभात	83
17.	सौन्दरनन्द महाकाव्य में वर्णित आदर्श राजनैतिक व्यवस्था	डॉ. विशाल भारद्वाज	88
18.	संस्कृत वाङ्मय में वर्णित वृत्ति	डॉ. नौनिहाल गौतम	93
19.	मानव जीवन में मुहूर्त की उपयोगिता	डॉ. रतन लाल भगवती प्रसाद बिजल्वाण	99
20.	मेघदूत एवं प्रियप्रवास में प्रकृति-चित्रण	डॉ. उमेश कुमार शुक्ल ललित शर्मा	103
21.	पातञ्जल महाभाष्य में प्रतिबिम्बित शिक्षा व्यवस्था	डॉ. वेदव्रत नीरज आर्य	110
22.	अष्टांग योग की प्रासंगिकता एवं जर्मनी में योगानुशीलन	वशिष्ठ बहुगुणा	113
23.	वैदिक साहित्य में जल	डॉ. लता देवी	119

मानव जीवन में मुहूर्त की उपयोगिता

डा० रतन लाल
शोध निर्देशक
ज्योतिष विभागाध्यक्ष
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भगवती प्रसाद बिजल्वाण
शोध छात्र, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

मुहूर्त की परिभाषा– प्रायः लोग मुहूर्त के अभाव में किसी कार्य को आरम्भ नहीं करते। मुहूर्त की आवश्यकता जीवन में सभी को पड़ती है। किन्तु मुहूर्त किसे कहते हैं? इस विषय में प्रथम विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। शब्द व्युत्पति शास्त्र व्याकरण के अनुसार 'मुह' प्रतिपादिक शब्द है। इसमें 'उरट' का आगम करने पर 'मुहुरट' शब्द का निष्पन्न होता है। 'अट' का अनुबन्ध लोप होने पर तथा उपधा दीर्घ करने पर 'मुहूर्त' शब्द बनता है। इस विषय में निरूक्तकार यास्क का वचन प्रमाण है। ''मुहुः पुनः पुनः शश्वद् भीक्ष्णमसकृत्समाः '' अर्थात् मुहु शब्द का अर्थ थोडा समय जो शीघ्रता से व्यतीत हो जाता है। ऋग्वेद में भी इसका उल्लेख ''विश्वामित्रनदी संवाद'' के क्रम में किया गया है। सोमरस पान के लिए भी वेदों में इसका तीन बार क्रम से उल्लेख मिलता है। इन दोनों ही स्थानों पर मुहूर्त शब्द का प्रयोग किंचित् क्षण के लिए ही होता था चारो वेदों मे ऋग्वेद में मुहूर्त का अर्थ दिन का एक निश्चित भाग मना गया है। अतः दिन–रात्रि के 30 धाम 2 घटी एक धाम (60÷30=2) यानि दिन में 15 मुहूर्त रात्रि में 15 मुहूर्त होते हैं। पुराणों में स्मृतियाँ में इसका विस्तृत विवेचन किया है। रघुवंशकार महाकवि कालिदास ने 'अज' का जन्म में ब्रह्म मुहूर्त का उल्लेख किया है। ब्राह्मण ग्रन्थों व वारहमिहिर के ग्रन्थों से यह ज्ञात होता है कि मुहूतों के नामों का प्रचलन कम होता था देवताओं के नामों का प्रचलन अधिक होता था। कुमारसभंव में पार्वती के वैवाहिक बधंन में मैत्र मुहूर्त का उल्लेख किया है।

वर्ष मासो दिनं लग्नं मुहूर्तश्चेति पंचकम्।
कालस्यांगानि मुख्यानि प्रबलान्युत्तरोत्तरम्।।[1]

इस संसार में सभी विद्यायें मनुष्य के लिए ज्ञान प्राप्ति हेतु तथा सामाजिक आर्थिक नैतिक एवंम् आध्यात्मिक मूल्यों का विकास एवम् वृद्धि के लिए है। सभी विद्याओं का स्रोत वेदों में ही प्राप्त होता है। 'यतः' 'सर्वाः प्रवृत्तयः'। सर्वज्ञानमयोवेदः। क्योंकि वेदों में प्रतिपादित विद्या ही सर्वश्रेष्ठ है। सभी विद्याओं का मूलतत्व वेद से ही निष्पन्न होता है। आचार्यों ने भी षड़ंग सहित वेदों के अध्ययन से ही सभी विद्याओं की निष्पत्ति स्वीकार की है।

छन्द पादौ तु वेदस्य, हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुख व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् सागंमधीत्यैव बहमलोके महीयते।।[2]

1. वृहद्वकहड़ाचक्रम– 1/1
2. पाणिनीयशिक्षा– 41/4

वेदों के अंग भूत तत्व ज्योतिष को चक्षु भी कहा गया है। 'ज्योतिषमयनं चक्षुः' षड़ग वेदों में ज्योतिषशास्त्र अन्यतम है। भारतीय ज्योतिष विज्ञान संसार का प्राचीनतम विज्ञान है। वेदविहित कर्म को ही धर्म कहा गया है। वेद विहित कर्म दो प्रकार है। श्रौत कर्म तथा स्मार्त कर्मों में सप्तपाकयज्ञा षोडशसंस्कार प्रमुख है। शास्त्रों में वर्णित संस्कार जो कि ज्योतिष शास्त्र की सहायता से ही शुभ काल की प्राप्ति के लिए किये जाते हैं इलिए संस्कार के बाद वेदाध्यन का अधिकार प्राप्त होता है। हिन्दुओं के संस्कार उनकी ससंकृति के मूलाधार है। भास्काराचार्य ने भी ज्योतिष की वेदागंता को प्रतिपादित किया है। सिद्धान्त शिरोमणि में ज्योतिष शास्त्र से ही काल का बोध होता है। यह भी कहा गया है।

वेदास्तावद् यज्ञकर्म प्रवृत्ताः यज्ञाः प्रोक्तस्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद् वेदांगत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात्।।[3]

UGC CARE List (Arts and Humanities) RNI : UTTMUL00029 ISSN : 2347-9892

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्ताराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and
UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - दशमम् अङ्कः - विंशतिः जूनमासः - 2023

प्रधानसम्पादकः

प्रो0 दिनेशचन्द्रशास्त्री

कुलपतिः

सम्पादकः

डॉ. अरुणकुमारमिश्रः

सहसम्पादकः

श्रीमतिमीनाक्षीसिंहरावतः

प्रकाशकः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः

हरिद्वारम्, उत्तराखण्डम्

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्ताराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - दशमम्   अङ्कः - विंशतिः   जूनमासः - 2023

प्रधानसम्पादकः

प्रो. दिनेशचन्द्रशास्त्री

कुलपतिः

सम्पादकः

डॉ. अरुणकुमारमिश्रः

सहसम्पादकः

श्रीमतिमीनाक्षीसिंहरावतः

प्रकाशकः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

उत्तराखण्डम्

क्रम सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
24.	वैदिक ऋचाओं में भक्तितत्त्व	चंदा	116
25.	महाभारत में उपलक्षित कुटुंब विमर्श	डॉ. जहाँ आरा	120
26.	आध्यात्मिक उन्नति और योग का आधुनिक प्रौद्योगिकी जनित तनाव प्रबंधन के संदर्भ में महत्व	मुकेश कुमार पाठक डॉ. सत्यानन्द	126
27.	साहित्य-संगीत का संगम : संस्कृत संगीतिकाएँ	डॉ. नौनिहाल गौतम	131
28.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पर्यावरणीय चेतना	विनय कुमार सेठी श्वेता अवस्थी	136
29.	गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के 'भारतोदय' पत्र की हिन्दी और संस्कृत को देन	डॉ. प्रविंद्र कुमार	140
30.	हिमकवि चँद्रकुँवर बर्त्वाल और इंद्रबहादुर खरे की काव्यानुभूतियों का संक्षिप्त अध्ययन	कु. रेखा रानी प्रो. दिनेश चन्द्र चमोला	145
31.	अर्वाचीन संस्कृत कविता में राष्ट्रिय चेतना	डॉ. राम रतन खण्डेलवाल डॉ. गणेश भागवत	151
32.	वाल्मीकि रामायण में नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण	डॉ. अखिलेश कुमार गौरव सिंह	161
33.	योगबीज में प्रतिपादित योग का स्वरूप	डॉ. देवेश कुमार मिश्र	165
34.	ऑनलाइन शिक्षा के अपने-अपने तर्क	डॉ. अरविन्दनारायण मिश्र	175
35.	घेरण्ड संहिता में वर्णित षट्कर्मो की योग चिकित्सा में उपयोगिता	डॉ. लक्ष्मी नारायण जोशी डॉ. अर्पिता नेगी	179
36.	हास्य चिकित्सा:एक स्वस्थ जीवन पद्धति	भाषा चौहान	187
37.	फेसबुक के माध्यम से राजनीतिक सूचनाओं का अवलोकन	विनीत कुमार	191
38.	वर्तमान परिदृश्य में प्राणायाम की प्रासंगिकता	रश्मि तिवारी	197
39.	महाभारत: मानवीय शिक्षा का महाकाव्य	मीनाक्षी सिंह रावत	203
40.	योग ग्रन्थों में वर्णित नाड़ीशोधन श्वांस तकनीक की तनाव प्रबन्धन में उपादेयता	सेतवान डॉ. नवीन	209
41.	भारतीय ज्ञानपरम्परा में महिला 'चूडालोपाख्यान' के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. ममता त्रिपाठी	214
42.	रामायण में पर्यावरण संचेतना	डॉ. सुचित्रा भारती	220
43.	ज्योतिषशास्त्र में नेत्र रोग विचार एवं उपचार	डॉ. रतन लाल	224
44.	महाकवि माघ का ऋतुवर्णन	डॉ. सुजाता शाण्डिल्य	230
45.	वाल्मीकि रामायण में वर्णित नैतिक मूल्य	डॉ. वेदव्रत	234

ज्योतिषशास्त्र में नेत्र रोग विचार एवं उपचार

डॉ. रतन लाल
अध्यक्ष
ज्योतिष एवं वास्तु विभाग
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार

आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों ही विषयों का समाधान ज्योतिषशास्त्र द्वारा संभव है। हम सभी अवगत हैं कि ज्योतिष प्रकाश का द्योतक है। प्रकाश को ज्ञान का पर्याय माना गया है। यदि विश्व को खगोल एवं भूगोल के विषय में ज्ञान करना हो तो केवल ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से ही जाना जा सकता है। ज्योतिष शास्त्र के लिए वेदवाक्य उपयुक्त ठहरता है कि जो वेद में है वही सर्वत्र है और जो वेद में नहीं वह अन्यत्र कहीं नहीं। यथा- यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नोहास्ति न तद् क्वचित्।1

उक्त वेदवाक्य के आधार पर यदि ज्योतिष शास्त्र के तीनों स्कन्धों का विस्तृत अध्ययन करें तो सम्पूर्ण खगोल में घटित होने वाली समस्त छोटी-बड़ी घटनाओं का उल्लेख हमारे पूर्ववर्ती अष्टादश आचार्यों को आधार बनाकर खगोल में ग्रहपिण्डों द्वारा अपनी-अपनी गतिस्थिति के आधार पर भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न परिवर्तन के कारण भिन्न-भिन्न स्वरूप दृग्गोचर होते हैं। यह गतिवशात् होने वाले परिवर्तन के कारण उनका प्रभाव भूमिवासियों को प्रभावित करता है। वराहमिहिर द्वारा अपनी बृहत्संहिता में यह उल्लेख पूर्व में ही किया जा चुका है। इसलिए संसार में सकारात्मकता एवं नकारात्मकता का कारण, मानव जगत में त्रिदोषों में वृद्धि एवं ह्रास का कारण, समस्त भूमण्डल में अकस्मात प्रकृति भिन्न कार्यों में वृद्धि होना इत्यादि समस्त गतिविधियां खगोल पिण्डों में परिवर्तन के कारण संभव है। अतः यदि ज्योतिष विज्ञान में खगोल को समझना हो तो ज्योतिष शास्त्र के स्कन्धत्रय में सिद्धान्तस्कन्ध को जानना होगा। इसी क्रम में सम्पूर्ण भूमण्डल पर सामूहिक शुभत्व अथवा अशुभत्व का आगमन, प्रकृतिजन्य प्रकोप का बढ़ना, ऋतुओं में अकस्मात परिवर्तन का कारण, भूकम्प का होना, ग्रहण का प्रतिफल, शकुन विचार, वृष्टिविज्ञान का ज्ञान, वास्तुविद्या, काक चेष्टा, ग्रहों में चारवश परिवर्तन के प्रभाव से प्रतिकूल स्थितियों का वातावरण पैदा होना इत्यादि समस्त घटनाओं के विषय में सामूहिक रूप से प्राप्त होने वाले प्रभाव का सम्पूर्ण उल्लेख बृहत्संहिता, नारदसंहिता,भृगुसंहिता,अत्रिसंहिता, रावणसंहिता आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है। सामूहिक फल का निर्णय आप आकाश की स्थिति के अध्ययन करके जान सकते हैं। इसी में यदि हम समस्त भूमण्डल वासियों के व्यक्तिगत समस्याओं के विषय में अध्ययन करें तो आप इस शास्त्र के माध्यम से अहर्निश प्रतिक्षण व्यक्ति विशेष द्वाराकिए जाने वाले तय किए जा चुके कार्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए जब व्यक्ति विशेष के विषय में जानकारी प्राप्त करनी हो तो हमें जातकशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए। जातकशास्त्र ज्योतिष शास्त्र की एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से हम इस काल को ही नहीं अपितु बीते हुए काल में घटित घटनाओं के विषय मे तथा जन्म-जन्मान्तरों में किये गए समस्त शुभाशुभ कर्मों के प्रभाववश जीवन का कौन सा कालखण्ड सुखमय होगा और कौन सा कालखण्ड दुखमय होगा इन सभी विषयों को आप जातकशास्त्र के माध्यम से घटित होने से पूर्व ही जान सकते हैं। ज्योतिषशास्त्र का आदेश है कि मानव में रोगों का आगम पापकर्म का प्रतिफल है लेकिन यह आवश्यक नहीं वह पाप कर्म कौन से जन्म में किया गया है क्योंकि जन्म-जन्मान्तरों में कृत पापकर्मों के प्रभाववश ही हम रोगों के शिकार होते हैं। जातकशास्त्र शुभ एवं अशुभ कर्मों द्वारा रोगाशोक, लाभ-हानि, आय-व्यय का विचार कर्मत्रय पर आधारित है। संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण में तीनों कर्म जातकशास्त्र में अहम भूमिका रखते हैं। यहाँ तक कि आयुर्वेद भी शरीर में रोग का कारण दोष प्रकोप को मानता है। यथा-

कर्मप्रकोपेण कदाचिदेके दोषप्रकोपेण भवन्ति चान्ये।2
तथापरे प्राणिषु कर्मदोषप्रकोपजा काममनोविकाराः॥

ऊपर हमने कर्मत्रय के विषय में चर्चा की है। कर्मत्रय में संचित कर्म का ज्ञान हम जन्मपत्री में बनने वाले

UGC CARE List (Arts and Humanities) RNI : UTTMUL00029 ISSN : 2347-9882

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्ताराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - नवमम् अङ्कः - नवदशः दिसम्बरमासः - २०२२

प्रधानसम्पादकः

प्रो० दिनेशचन्द्रशास्त्री

कुलपतिः

सम्पादकः

डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः

प्रकाशकः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः

हरिद्वारम्, उत्तराखण्डम्

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्ताराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - नवमम् अङ्कः - नवदशः दिसम्बरमासः - २०२२

प्रधानसम्पादकः

प्रो. दिनेशचन्द्रशास्त्री

कुलपतिः

सम्पादकः

डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः

प्रकाशकः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

उत्तराखण्डम्

क्रम सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
22.	वैज्ञानिक दृष्टि से गोधूलिलग्न की महत्ता	डॉ.रतनलाल:	130
23.	योगदर्शन एवं गीता में प्रतिपादित आन्तरिक विकास के सूत्र	डॉ. सरस्वती	136
24.	भर्तृहरिकृत 'नीतिशतक' का मानव-जीवन पर प्रभाव	डॉ. अनुरिषा	141
25.	संगीतिक शास्त्रों में नाट्यशास्त्र	डा. कुलविंदर कौर	145
26.	योगग्रंथों में यम-नियम विवेचन	किरण कुमार आर्य	151
27.	वैदिकवाङ्मय में सृष्टिविज्ञान	डा.कपिलदेव हरेकृष्ण शास्त्री	155
28.	गढ़वाली लोकगीतों में यथार्थ बोध	अनूप बहुखण्डी	164
29.	अग्निपुराण में नाटक निरूपण	पवन कुमार	171
30.	आयुर्वेद में प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप एवं उपयोगिता	सलोनी	174
31.	गाँधी के पर्यावरणीय चिन्तन की दार्शनिक विवेचना	डा. सरिता रानी	179
32.	योग आन्तरिक परिष्कार का विज्ञान	मनन जी, प्रो. मनुदेव बन्धु	184
33.	संस्कृत भाषा, साहित्य व मनोविज्ञान का सम्बन्ध	कु॰ मंजू पाण्डेय	190
34.	मृदुला सिन्हा के साहित्य में प्रेम के विविध स्वरूप	रीना अग्रवाल	195
35.	अष्टाध्यायी में पदाधिकार का स्वरूप एवं विषय	डा. रवीन्द्रकुमार:	198
36.	नादयोग संगीत का सामान्य जीवन पर प्रभाव	डॉ. शिवचरण नौडियाल	206
37.	कश्मीरी शैव कवयित्री लल्द्यद् एवं उनका 'वाखसाहित्य'	रमेश चन्द्र नैलवाल	213
38.	योग ग्रन्थों में वर्णित आहार की अवधारणा	डा. सरस्वती काला सन्दीप कुमार	219
39.	मनुस्मृति: मानवीय मूल्य का आधार	मीनाक्षी सिंह रावत	224
40.	वैदिक कालीन व्यावसायिक शिक्षा का आधुनिक स्वरूप	सुधा	229
41.	त्रिगुणात्मक प्रकृति एवं आहार द्वारा जीवन शैली प्रबंधन में श्रीमद्भगवद्गीता की भूमिका	लीलावती गुसाई डा. सुनील कुमार श्रीवास	235
42.	Legal Norms in "*NARADA SMRITI*" *vis a vis* Modern Laws in India: A Jurisprudential Analysis	Dr. Rajesh Kumar Dube	244
43.	Nāda Yoga in Haṭha Yogic Literature: An Analysis	Narpal Singh Prof. (Dr.) Surendra Kumar	250
44.	Natya or Theatre in the Light of Bharatmuni's Natyashastra	Dr Bharati Sharma	258
45.	Our *Pranic* Existence, *Prana-Spand* And Its Relationship With *Karma*-s	Prem Prabhu	263

वैज्ञानिक दृष्टि से गोधूलिलग्न की महत्ता

डॉ.रतनलाल:
अध्यक्ष:,ज्योतिषवास्तुशास्त्रविभाग:
उत्तराखण्ड-संस्कृत-विश्वविद्यालय:
(हरिद्वारम्)

भारतीय ज्योतिष शास्त्र गणित प्रक्रिया में सम्पूर्ण खगोल मण्डल को द्वादश भागों में विभाजित करता है जिसको ज्योतिषीय भाषा में भगण कहा गया है भगण मण्डल में द्वादश भाग ही बारह राशियों के प्रतीक हैं प्रत्येक भाग में भिन्न-भिन्न प्रतिकृति एवं तारों के द्वारा निर्मित प्रत्येक भाग का अलग-अलग गुणधर्म है उसी के आकार-प्रकार एवं गुण-धर्म के अनुसार ही हमारे महर्षियों ने पुन:-पुन: शोध अनुसन्धान करके प्रत्येक भाग को बारह अलग-अलग नामों से सम्बोधित किया है जिसमें प्रत्येक भाग को लग्न अथवा राशि कहा गया है प्रत्येक लग्न का अपना-अपना गुणधर्म है जिसमें अलग-अलग तारों द्वारा अलग-अलग राशियों के माध्यम से अमृत रूपी वर्षा की धारा तथा किन्हीं राशियों से विष की धारा प्रभावित होती है जिसके फलस्वरूप प्रत्येक लग्न में शुभाशुभ कार्य सम्पन्न नहीं किये जा सकते। हमारे महर्षियों द्वारा प्रमुख रूप से सोलह संस्कारों को करने का निर्देश दिया गया है ताकि मानव संस्कारित होकर मनुष्य की श्रेणी में आ सके। इन्हीं सोलह संस्कारों में विवाह संस्कार जीवन के प्रधान संस्कार की श्रेणी में है। प्राय: देखा गया है कि पाणिग्रहण संस्कार हेतु जब कोई लग्न नहीं मिल रहा हो तो देवज्ञजन गोधूलि लग्न को उपयुक्त मानते हैं वस्तुत: पाणिग्रहण संस्कार में लग्न की प्रमुखप्रधानता है। लग्न की प्रधानता के विषय में श्री रामदैवज्ञ मुहूर्त चिन्तामणिकार का कथन इस प्रकार है कि- सुन्दर स्वभाव स्त्री धर्म, अर्थ, काम इन तीनों वर्गों को देने वाली है और पति का सहयोग करते हुए तीनों ऋणों से मुक्त कराती है। स्त्री की सुशीलता विवाह कालिक लग्न के अधीन है। अर्थात् शास्त्र विहित शुभ मुहूर्त में विवाह होने पर स्त्री का स्वभाव और आचरण पवित्र होता है। इसलिए विवाह का विचार किया जाता है। क्योंकि सुसन्तति, शील और धर्म विवाह कालिक लग्न के अधीन होते हैं। यथा-

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्या:।
तस्माद्विवाहसमय: परिचिन्त्यते हि तन्निघ्नतामुपगता: सुतशीलधर्मा:।।१

गोधूलि लग्न की विशेषता वास्तविक रूप में गौमाता से है चूँकि वैज्ञानिक आधार इस लग्न का यह था कि प्राय: सूर्यास्त काल में गायें चारागाह से लौटकर असंख्य झुण्डों में चलती थी तो उनके क्षुरों के द्वारा उड़ने वाली धूलि से सम्पूर्ण आकाश मण्डल आच्छादित हो जाने पर उस कालखण्ड में किया गया प्रत्येक शुभ कार्य निर्विघ्नता पूर्वक सम्पन्न होता था। जहाँ तक आज की परिस्थिति कुछ भिन्न है आज तो न ही चारागाह शेष हैं और नहीं गाय पालन उस स्तर पर होता है अत: जब गाय पालन नहीं होगा, चारागाह नहीं होंगी तो धूल कहां से उठेगी इसलिए समय और स्थिति के अनुसार इस